ISSN: 2582-7219

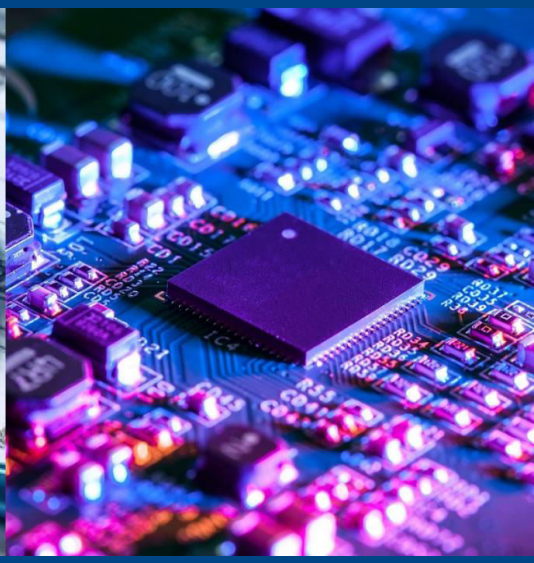

# International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology

*(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)*

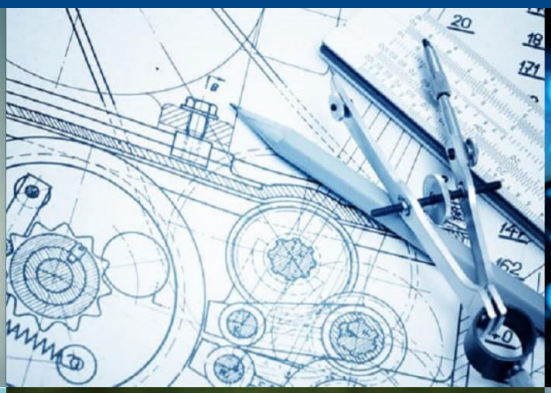

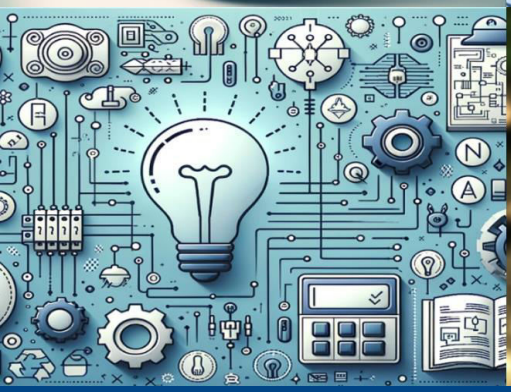

**Impact Factor: 7.521**

**Volume 8, Issue 1, January 2025**

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 1, January 2025| DOI:10.15680/IJMRSET.2025.0801074

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

# आध्यात्मिकता और मानवता के संदेशो के प्रसार में सूफी दर्शन के योगदान का अध्ययन

**Shameem Taj, Dr. Sunil Kumar Chaturvedi**

Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan, India

Professor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan, India

**सारांश:** सूफी मत, जिसे सूफीवाद भी कहा जाता है, इस्लाम धर्म की एक आध्यात्मिक और रहस्यवादी धारा है जो अपने अनुयायियों को ईश्वर के साथ एक गहरे व्यक्तिगत और आध्यात्मिक संबंध स्थापित करने की दिशा में मार्गदर्शन करती है। इसका उद्भव इस्लामिक इतिहास के प्रारंभिक काल में हुआ और यह इस्लाम की मुख्य धारा से भिन्न होते हुए भी उससे प्रभावित है। सूफी मत का उद्देश्य एक आध्यात्मिक साधक को ईश्वर के निकट लाना है, जो भौतिकता और सांसारिक इच्छाओं से परे जाकर आत्मिक शुद्धता और ईश्वर से प्रेम पर आधारित होता है। सूफी मत का विकास और विस्तार विभिन्न कालों में विभिन्न समाजों और संस्कृतियों में हुआ, और यह इस्लामी समाज के विभिन्न पहलुओं को गहराई से प्रभावित करता रहा है। सूफी मत का उद्भव इस्लाम के प्रारंभिक युग में हुआ, विशेष रूप से पैगंबर मोहम्मद के जीवनकाल के बाद। इसके मूल सिद्धांत कुरान और हदीस (पैगंबर मोहम्मद के कथन और कार्य) पर आधारित हैं। सूफी संतों ने इस्लामिक धर्म के बाहरी रूपों के बजाय उसके आंतरिक, रहस्यवादी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने सांसारिक जीवन को त्यागकर, ईश्वर से प्रेम और समर्पण की ओर अग्रसर होने का मार्ग चुना। प्रारंभिक सूफी संतों ने भौतिक जीवन के भोग-विलास को त्यागकर सादगी, विनम्रता और आत्मसंयम का जीवन व्यतीत किया। इसी साधना ने सूफी गत के प्रारंभिक रूप को आकार दिया। सूफी शब्द की उत्पत्ति के बारे में भी कई मत हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह शब्द "सूफ" से निकला है, जिसका अर्थ ऊन है। प्रारंभिक सूफी संत ऊनी कपड़े पहनते थे, जो उनके त्याग और सादगी का प्रतीक माना जाता था। वहीं, कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि सूफी शब्द अरबी शब्द "सफा" से निकला है, जिसका अर्थ हे शुद्धता। यह सूफी संतों के आंतरिक शुद्धता और पवित्रता की दिशा में किए गए प्रयासों को दर्शाता है। सूफी मत का विकास विभिन्न चरणों में हुआ और यह कई महान सूफी संतों और विचारकों के माध्यम से विस्तारित हुआ। प्रारंभिक सूफियों का मुख्य उद्देश्य आत्मशुद्धि और ईश्वर के साथ एकता प्राप्त करना था। यह प्रवृत्ति धीरे-धीरे एक संगठित रूप में परिवर्तित हुई और सूफी मत के विभिन्न सिलसिलों (आध्यात्मिक वंशावली या परंपरा) का निर्माण हुआ।

**मुख्यशब्द**: आध्यात्मिकता, मानवता के संदेश, सूफी दर्शन, इस्लामिक इतिहास, आत्मिक शुद्धता, ईश्वर से प्रेम।

## I. प्रस्तावना

सूफी मत के प्रारंभिक विकास में कई महत्वपूर्ण संतों की भूमिका रही है। इनमें हजरत हसन बसरी (642-728 ई.) का नाम प्रमुख है, जिन्हें प्रारंभिक सूफियों में से एक माना जाता है। हसन बसरी ने इस्लाम के प्रारंभिक दिनों में आत्मा की शुद्धता और ईश्वर के प्रति समर्पण के सिद्धांतों का प्रचार किया। उन्होंने सांसारिक सुखों को त्यागने और आत्मसंयम के जीवन की वकालत की। उनकी शिक्षाओं ने आने वाले सूफी संतों को गहराई से प्रभावित किया। रबीया अल-अदविया (713-801 ई.) एक और महान सूफी संत थीं, जिन्होंने सूफी गत को नया आयाम दिया। रबीया के अनुसार, ईश्वर से प्रेम निस्वार्थ होना चाहिए, जिसमें स्वर्ग की इच्छा या नरक के भय का कोई स्थान न हो। उनकी प्रेम की अवधारणा ने सूफी मत के प्रेममूलक सिद्धांत को जन्म दिया। सूफी मत के विकास के दौरान विभिन्न सूफी सिलसिलों का गठन हुआ। प्रत्येक सिलसिला एक प्रमुख सूफी संत के विचारों और शिक्षाओं पर आधारित होता है, और वह अपने अनुयायियों को उसी दिशा में मार्गदर्शन करता है। चिश्तिया सिलसिला, जो ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती द्वारा स्थापित किया गया था, भारत में सूफी मत के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला प्रमुख सिलसिला है। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने प्रेम, सहिष्णुता और मानवता के सिद्धांतों पर जोर दिया, जो भारतीय समाज में सूफी मत को लोकप्रिय बनाने में सहायक सिद्ध हुए। कादरिया सिलसिला, जो अब्दुल कादिर जिलानी द्वारा स्थापित किया गया था, सूफी मत के एक अन्य प्रमुख सिलसिला है। इस सिलसिला में आत्मसंयम, विनम्रता और ईश्वर के प्रति निस्वार्थ भक्ति पर जोर दिया गया। इसी प्रकार नक्शबंदिया और सुहरवर्दिया सिलसिले भी सूफी मत के विकास और प्रसार में महत्वपूर्ण रहे हैं।

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 1, January 2025| DOI:10.15680/IJMRSET.2025.0801074

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

सूफी दर्शन इस्लाम की रहस्यवादी धारा है, जो आध्यात्मिकता और मानवता के बीच गहरे संबंधों को उजागर करता है। यह दर्शन मानव जीवन की मर्म को समझने और ईश्वर से व्यक्तिगत रूप से जुड़ने का मार्ग दिखाता है। सूफी संतों ने ईश्वर की खोज को आत्मा की खोज के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें भौतिक संसार से ऊपर उठकर आध्यात्मिकता को गले लगाना और मानवता की सेवा करना प्रमुख उद्देश्य है। सूफी मत ने धार्मिक सीमाओं को तोड़कर प्रेम, सेवा, सहिष्णुता, और भाईचारे का संदेश फैलाया है। इसके माध्यम से सूफी संतों ने मानवता के वास्तविक अर्थ को उजागर किया, जो उनके पूरे दर्शन के केंद्र में है। सूफी दर्शन का मूल आधार प्रेम और ईश्वर के प्रति समर्पण है। सूफी मत के अनुसार, ईश्वर केवल एक दार्शनिक अवधारणा या सैद्धांतिक विचार नहीं है, बल्कि एक सजीव अनुभव है, जिसे केवल प्रेम और भक्ति के माध्यम से समझा जा सकता है। सूफियों का मानना है कि हर व्यक्ति में ईश्वर की एक झलक होती है, और इस कारण प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा में दिव्यता निहित है। सूफी संतों का उद्देश्य आत्मा की शुद्धि और ईश्वर के साथ एकात्मता की प्राप्ति करना है, जिसे वे अपने साधना और तपस्या के माध्यम से प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। सूफी मत की आध्यात्मिकता मानवता की सेवा से गहराई से जुड़ी हुई है। सूफी संतों ने न केवल आत्मा की खोज पर बल दिया, बल्कि यह भी कहा कि आत्मिक उन्नति केवल तब संभव है जब हम मानवता की सेवा में तत्पर होते हैं। सूफी मत का यह संदेश स्पष्ट करता है कि आध्यात्मिकता केवल व्यक्तिगत साधना का विषय नहीं है, बल्कि इसमें समाज और उसके लोगों के प्रति दायित्व भी शामिल है।

सूफी मत में आध्यात्मिकता का मूल उद्देश्य ईश्वर से निकटता प्राप्त करना है। सूफियों के अनुसार, ईश्वर को पाने का मार्ग सांसारिक भोग-विलास और अहंकार से मुक्त होकर आत्मा की शुद्धि में है। वे इस संसार को एक अस्थायी स्थान मानते हैं और ईश्वर को शाश्वत सत्य के रूप में देखते हैं। इसीलिए सूफी साधना में ध्यान, आत्मसंयम, प्रार्थना, और सेवा को विशेष महत्व दिया जाता है। यह साधना आत्मा की शुद्धि के लिए होती है, ताकि साधक ईश्वर के साथ गहरे और व्यक्तिगत संबंध को अनुभव कर सके।

सूफी संत इस बात पर बल देते हैं कि ईश्वर को पाने का मार्ग केवल बाहरी कर्मकांडों से नहीं, बल्कि आंतरिक प्रेग, भक्ति और समर्पण से है। वे सांसारिक जीवन को एक यात्रा मानते हैं, जिसका अंतिम लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति है। ईश्वर के साथ इस आध्यात्मिक संबंध को प्राप्त करने के लिए सूफी संत एक गुरु (पीर) की आवश्यकता पर बल देते हैं, जो साधक को मार्गदर्शन करता है और उसे आत्मा की गहराइयों में ले जाकर ईश्वर से मिलाता है।

सूफी दर्शन में प्रेम का विशेष स्थान है। सूफियों के अनुसार, ईश्वर से प्रेम करना ही सच्ची भक्ति है और यह प्रेम निस्वार्थ होना चाहिए। सूफियों का यह प्रेम व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर प्रकट होता है। व्यक्तिगत रूप में, यह प्रेम ईश्वर के प्रति समर्पण और आत्मा की शुद्धि के रूप में प्रकट होता है। सामाजिक रूप में, यह प्रेम मानवता की सेवा, करुणा, और दया के रूप में प्रकट होता है। सूफी संतों का मानना है कि ईश्वर से प्रेम करना तभी सार्थक है, जब वह प्रेम मानवता की सेवा में प्रकट हो।

रबीया अल-अदविया, एक प्रमुख सूफी संत, ने प्रेम की इस अवधारणा को बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, ईश्वर से प्रेम स्वर्ग की इच्छा या नरक के भय से प्रेरित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह प्रेम निस्वार्थ और पूर्ण रूप से समर्पित होना चाहिए। रबीया ने कहा कि जब तक प्रेम स्वार्थ से मुक्त नहीं होगा, तब तक वह सच्चा प्रेम नहीं हो सकता। इसी सिद्धांत पर सूफी संतों ने अपनी साधना और दर्शन का निर्माण किया, जिसमें प्रेम की सर्वोच्चता को मान्यता दी गई।

सूफी दर्शन में मानवता के प्रति प्रेम और सेवा को अत्यधिक महत्व दिया गया है। सूफी संतों का मानना था कि ईश्वर की पूजा केवल मस्जिदों या प्रार्थनाओं के माध्यम से नहीं होती, बल्कि वह तब होती है जब हम मानवता की सेवा करते हैं। उनके अनुसार, हर इंसान में ईश्वर का अंश होता है, और इसलिए किसी भी इंसान की सेवा करना ईश्वर की सेवा के समान है। यह सूफी दर्शन का वह पहलू है, जिसने समाज में सामाजिक न्याय, सहिष्णुता, और समानता की भावना को बढ़ावा दिया।

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती, जो भारत के प्रमुख सूफी संतों में से एक थे, ने अपने पूरे जीवन में मानवता की सेवा और प्रेम का संदेश दिया। उन्होंने कहा, "अगर तुम ईश्वर से प्रेम करते हो, तो उसकी रचना से भी प्रेम करो।" ख्वाजा साहब ने अमीर गरीब, हिंदू मुस्लिम, जाति धर्म के भेदभाव से परे जाकर सभी के प्रति समान प्रेम और करुणा का व्यवहार किया। उनके इस संदेश ने भारतीय समाज में सूफी मत को गहरे रूप से स्थापित किया और मानवता की सेवा को धर्म के साथ जोड़ने का काम किया।

## II. आध्यात्मिकता का सूफी दृष्टिकोण

सूफी दर्शन का मूल आधार आध्यात्मिकता है, जो इस्लाम के रहस्यवादी धारा से विकसित हुआ है। सूफियों ने आध्यात्मिकता को मानव जीवन का केंद्र बिंदु माना और इसे ईश्वर के प्रति प्रेम, समर्पण और आत्मा की शुद्धि के रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार,

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 1, January 2025| DOI:10.15680/IJMRSET.2025.0801074

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

आध्यात्मिकता एक आंतरिक यात्रा है जो भौतिक संसार के परे आत्मा की खोज और ईश्वर से मिलन की प्रक्रिया है। इस मार्ग में साधक को अपने अहंकार, इच्छाओं, और सांसारिक आकांक्षाओं को त्याग कर एक ऐसे उच्चतम स्तर पर पहुंचना होता है जहां वह अपने अस्तित्व को ईश्वर के साथ एक कर सके। सूफी दृष्टिकोण के अनुसार, यह आध्यात्मिक यात्रा ही सच्चे जीवन का मार्ग हे और इसी से व्यक्ति को अपने अस्तित्व और ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का अनुभव होता है।

सूफी आध्यात्मिकता की विशेषताएँ

सूफी आध्यात्मिकता की प्रमुख विशेषता यह है कि यह बाहरी धार्मिक कृत्यों और कर्मकांडों से अधिक आंतरिक अनुभूति और प्रेम पर बल देती है। सूफी संतों का मानना है कि ईश्वर केवल बाहरी धार्मिक प्रथाओं से नहीं पाया जा सकता, बल्कि उसके लिए आंतरिक शुद्धि, प्रेम और आत्मसमर्पण की आवश्यकता होती है। सूफियों का यह दृष्टिकोण इस्लामी शरीयत से थोड़ा अलग है, क्योंकि वे व्यक्तिगत अनुभव और आंतरिक चेतना को ईश्वर की प्राप्ति का सर्वोच्च साधन मानते हैं। उनके अनुसार, हर व्यक्ति की आत्मा में ईश्वर का अंश है, और आध्यात्मिकता का उद्देश्य उस अंश को पहचानकर ईश्वर से मिलन करना है। सूफी आध्यात्मिकता का मार्ग प्रेम और भक्ति से भरा हुआ है। सूफी संतों का यह मानना है कि ईश्वर से प्रेम करना और उसे अपने जीवन में केंद्र बनाना ही सच्ची आध्यात्मिकता है। सूफी प्रेम निस्वार्थ होता है और इसमें किसी प्रकार की अपेक्षा या लाभ की कामना नहीं होती। यह प्रेम ईश्वर के प्रति संपूर्ण समर्पण की मांग करता है, जहां साधक अपने व्यक्तिगत अहंकार को त्यागकर ईश्वर के प्रेम में डूब जाता है। इस प्रेम के माध्यम से सूफी साधक यह अनुभव करता है कि ईश्वर उसके भीतर है और वह स्वयं ईश्वर का एक अंश है।

ईश्वर के साथ एकत्व की खोज

सूफी दृष्टिकोण में आध्यात्मिकता का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य ईश्वर के साथ एकत्व प्राप्त करना है। सूफियों का मानना है कि हर व्यक्ति की आत्मा ईश्वर का एक अंश है और इस संसार में उसकी यात्रा का उद्देश्य इस अंश को ईश्वर के साथ एक करना है। सूफी संतों के अनुसार, सांसारिक जीवन केवल एक अस्थायी यात्रा है और इसका अंतिम लक्ष्य ईश्वर की शरण में पहुंचना है। यह अवधारणा उन्हें इस्लाम के पारंपरिक सिद्धांतों से थोड़ा अलग करती है, क्योंकि वे शारीरिक और बाहरी कर्मों से अधिक आत्मा की शुद्धि और आंतरिक ध्यान पर जोर देते हैं। सूफियों के अनुसार, ईश्वर की खोज एक आंतरिक प्रक्रिया है, जिसे साधना, ध्यान, प्रार्थना और भक्ति के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। इस साधना का उद्देश्य आत्मा की शुद्धि करना है, ताकि साधक अपने भीतर की दिव्यता को पहचान सके और ईश्वर के साथ अपना संबंध स्थापित कर सके। सूफी संत इस मार्ग पर चलने के लिए एक गुरु या पीर की आवश्यकता पर बल देते हैं, जो साधक को सही मार्ग दिखाता है और उसे सांसारिक बंधनों से मुक्त करता है। सूफी संतों का यह भी मानना है कि ईश्वर को पाने का मार्ग व्यक्तिगत अनुभवों और आंतरिक अनुभवों के माध्यम से होता है। सूफी आध्यात्मिकता में ईश्वर केवल एक सैद्धांतिक या दार्शनिक अवधारणा नहीं है, बल्कि वह एक सजीव अनुभव है, जिसे केवल प्रेम और भक्ति के माध्यम से ही अनुभव किया जा सकता है। यह अनुभव साधक को अपने अस्तित्व की गहराइयों में ले जाता है, जहां वह ईश्वर की उपस्थिति को महसूस करता है और उसके साथ एकत्व की प्राप्ति करता है।

आत्मा की शुद्धि और तपस्या

सूफी संत आत्मा की शुद्धि को आध्यात्मिकता का सबसे महत्वपूर्ण पहलू मानते हैं। उनके अनुसार, आत्मा का शुद्ध होना आवश्यक है ताकि व्यक्ति ईश्वर के साथ मिलन कर सके। आत्मा की शुद्धि के लिए सूफी संत कई प्रकार की साधनाओं और तपस्याओं का अभ्यास करते हैं, जिनमें ध्यान, प्रार्थना, व्रत और संयम शामिल हैं। यह तपस्या उन्हें भौतिक संसार से ऊपर उठकर आत्मा की गहराइयों में जाने में मदद करती है। सूफी संतों के अनुसार, जब आत्मा पूरी तरह से शुद्ध हो जाती है, तो व्यक्ति को ईश्वर की प्राप्ति का अनुभव होता है। सूफी साधना का एक प्रमुख पहलू सांसारिक बंधनों और मोह से मुक्ति पाना है। सूफी संत सांसारिक जीवन को अस्थायी मानते हैं और इसीलिए वे अपनी साधना में भौतिक इच्छाओं और सांसारिक भोग-विलास को त्यागने पर जोर देते हैं। उनके अनुसार, जब तक व्यक्ति सांसारिक इच्छाओं और भोग-विलास में बंधा रहता है, तब तक वह आत्मा की शुद्धि और ईश्वर के साथ एकत्व की प्राप्ति नहीं कर सकता। इसीलिए सूफी संत आत्मसंयम और तपस्या के माध्यम से आत्मा को शुद्ध करने का प्रयास करते हैं।

सूफी प्रेम का सिद्धांत

सूफी दर्शन में प्रेम को आध्यात्मिकता का प्रमुख आधार माना जाता है। सूफी संतों के अनुसार, ईश्वर से प्रेम करना ही सच्ची भक्ति है और यह प्रेम निस्वार्थ होना चाहिए। सूफी प्रेम न केवल ईश्वर के प्रति, बल्कि मानवता के प्रति भी होता है। सूफी संतों का मानना है कि जब तक व्यक्ति अपने जीवन में प्रेम और करुणा को नहीं अपनाता, तब तक वह ईश्वर की वास्तविक अनुभूति नहीं कर सकता। उनका यह प्रेम किसी स्वार्थ या अपेक्षा पर आधारित नहीं होता, बल्कि यह पूरी तरह से निस्वार्थ और समर्पण से भरा होता है। सूफी संत रबीया अल-अदविया ने इस प्रेम की अवधारणा को बहुत स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि ईश्वर से प्रेम करना स्वर्ग

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 1, January 2025| DOI:10.15680/IJMRSET.2025.0801074

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

की प्राप्ति या नरक के भय से प्रेरित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह प्रेम केवल ईश्वर की प्राप्ति के लिए होना चाहिए। सूफी संतों के अनुसार, यह प्रेम ईश्वर के प्रति संपूर्ण समर्पण का प्रतीक है, जिसमें साधक अपने अहंकार और इच्छाओं को त्याग कर केवल ईश्वर के प्रेम में डूब जाता है। यही प्रेम सूफी आध्यात्मिकता का सार है।

सूफी गुरु-शिष्य परंपरा

सूफी आध्यात्मिकता में गुरु या पीर का महत्वपूर्ण स्थान है। सूफियों का मानना है कि ईश्वर की खोज और आध्यात्मिक यात्रा पर चलने के लिए एक गुरु का मार्गदर्शन आवश्यक होता है। गुरु वह होता है जो साधक को आत्मा की गहराइयों में ले जाता है और उसे सही दिशा में मार्गदर्शन करता है। सूफी संतों के अनुसार, गुरु के बिना आत्मा की शुद्धि और ईश्वर के साथ एकत्व प्राप्त करना असंभव है। गुरु-शिष्य परंपरा में गुरु का कार्य साधक की आत्मा को शुद्ध करना, उसे भौतिक बंधनों से मुक्त करना और उसे ईश्वर के निकट ले जाना होता है। गुरु के मार्गदर्शन से ही साधक अपने भीतर की दिव्यता को पहचानता है और ईश्वर के साथ एकात्मता की प्राप्ति करता है। इसीलिए सूफी संत अपने जीवन में एक गुरु का महत्व बहुत अधिक मानते हैं और उनकी शिक्षाओं का पालन करते हैं।

सूफी साधना में ध्यान और प्रार्थना

सूफी साधना में ध्यान और प्रार्थना का विशेष स्थान है। सूफी संत ध्यान के माध्यम से अपने मन को स्थिर करते हैं और ईश्वर के साथ एकात्मता प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। ध्यान और प्रार्थना उन्हें भौतिक संसार से अलग करके आत्मा की शुद्धि में मदद करते हैं। सूफी साधना में ध्यान का उद्देश्य आत्मा की गहराइयों में जाना और ईश्वर की उपस्थिति को अनुभव करना है।

इसके अलावा, प्रार्थना सूफी साधकों के लिए आत्मा की शांति और ईश्वर के प्रति समर्पण का प्रतीक है। प्रार्थना के माध्यम से सूफी संत ईश्वर के प्रति अपनी भक्ति और प्रेम को प्रकट करते हैं। वे मानते हैं कि प्रार्थना उन्हें ईश्वर के निकट ले जाती है और उनकी आत्मा को शुद्ध करती है। सूफी प्रार्थनाएं अवसर कव्वाली और संगीत के माध्यम से होती हैं, जो आत्मा को शांति और आनंद की अनुभूति कराती हैं।

सूफी संतों का प्रेम और भक्ति का सिद्धांत

सूफी संतों का प्रेम और भक्ति का सिद्धांत सूफी दर्शन का केंद्रीय तत्व है, जो आत्मा की गहराइयों में ईश्वर की खोज और ईश्वर के प्रति निस्वार्थ प्रेम की अवधारणा पर आधारित है। सूफी संतों के अनुसार, प्रेम और भक्ति केवल बाहरी धार्मिक कृत्यों और कर्मकांडों से नहीं, बल्कि आंतरिक अनुभूति और समर्पण से प्राप्त की जाती है। सूफी दर्शन में प्रेम और भक्ति को आध्यात्मिकता का प्रमुख साधन माना जाता है, जिसमें साधक अपने भीतर की दिव्यता को पहचानकर ईश्वर से मिलन की यात्रा करता है। सूफी संतों का यह सिद्धांत भौतिक संसार से ऊपर उठकर आत्मा की शुद्धि और ईश्वर के साथ एकत्व प्राप्त करने के उद्देश्य को प्रकट करता है।

सूफी प्रेम की अवधारणा

सूफी संतों के अनुसार, प्रेम ईश्वर से जुड़ने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। यह प्रेम न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि सामाजिक और मानवता के प्रति भी प्रकट होता है। सूफी प्रेम किसी स्वार्थ या लाभ की कामना से परे होता है। यह पूर्ण रूप से निस्वार्थ, समर्पित, और ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास पर आधारित होता है। सूफी संतों ने प्रेम को एक ऐसा साधन माना है जो व्यक्ति को ईश्वर के निकट ले जाता है और उसे आत्मा की गहराइयों में जाकर ईश्वर की वास्तविक उपस्थिति का अनुभव कराता है। प्रेम की इस अवधारणा को सूफी संत रबीया अल-अदविया के जीवन और शिक्षाओं से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। रबीया ने कहा कि ईश्वर से प्रेम स्वर्ग की प्राप्ति या नरक के भय से प्रेरित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह प्रेम केवल ईश्वर की प्राप्ति के लिए होना चाहिए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सच्चा प्रेम वही होता है जब व्यक्ति अपने व्यक्तिगत अहंकार और इच्छाओं को त्याग कर केवल ईश्वर के प्रेम में डूब जाता है। उनके अनुसार, जब प्रेम निस्वार्थ होता है, तब वह व्यक्ति को आध्यात्मिक ऊंचाइयों तक ले जाता है और उसे ईश्वर के साथ एकत्व की प्राप्ति कराता है।

भक्ति का सूफी दृष्टिकोण

सूफी संतों के अनुसार, भक्ति केवल बाहरी धार्मिक अनुष्ठानों और कर्मकांडों से नहीं होती, बल्कि यह आंतरिक समर्पण और प्रेम का परिणाम होती है। सूफी भक्ति का उद्देश्य ईश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध स्थापित करना है, जिसमें साधक अपने दिल की गहराइयों से ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण व्यक्त करता है। इस भक्ति का लक्ष्य केवल ईश्वर की पूजा करना नहीं है, बल्कि ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण और उसके प्रेम में खो जाना है। भक्ति के इस दृष्टिकोण को समझने के लिए सूफी संतों के जीवन और शिक्षाओं पर गौर करना महत्वपूर्ण है। उन्होंने भक्ति को केवल धार्मिक कर्मकांडों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे आत्मा की गहराइयों में जाकर ईश्वर के

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 1, January 2025| DOI:10.15680/IJMRSET.2025.0801074

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

प्रति अटूट प्रेम और समर्पण के रूप में देखा। सूफी संतों ने यह सिखाया कि भक्ति केवल एक भावना नहीं है, बल्कि यह एक जीवन शैली है जो व्यक्ति को ईश्वर के निकट ले जाती है और उसे आत्मा की शुद्धि की ओर मार्गदर्शन करती है।

प्रेम और भक्ति के माध्यम से आत्मा की शुद्धि

सूफी संतों का मानना है कि प्रेम और भक्ति के माध्यम से आत्मा की शुद्धि होती है। जब व्यक्ति ईश्वर के प्रति सच्चे प्रेम और समर्पण से भरा होता है, तो उसकी आत्मा स्वतः ही शुद्ध होती है। इस शुद्धि के माध्यम से वह भौतिक संसार की बेड़ियों से मुक्त हो जाता है और आत्मा की गहराइयों में जाकर ईश्वर के साथ एकत्व की प्राप्ति करता है। इस शुद्धि के लिए सूफी संत कई प्रकार की साधनाओं और तपस्याओं का अभ्यास करते हैं, जिनमें ध्यान, प्रार्थना, और आत्मसंयम शामिल हैं। सूफी साधना में प्रेम और भक्ति के माध्यम से आत्मा की गहराइयों में जाकर ईश्वर की उपस्थिति को महसूस किया जाता है। जब व्यक्ति अपने भीतर की दिव्यता को पहचान लेता है और ईश्वर के प्रति निस्वार्थ प्रेम को अपनाता है, तो उसकी आत्मा पूरी तरह से शुद्ध हो जाती है। इस शुद्धि के बाद, साधक को ईश्वर के साथ एकात्मता का अनुभव होता है और वह ईश्वर की वास्तविक उपस्थिति को पहचानता है।

सामाजिक और मानवता के प्रति प्रेम

सूफी संतों का प्रेम और भक्ति का सिद्धांत केवल व्यक्तिगत आध्यात्मिकता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और मानवता के प्रति प्रेम और सेवा को भी प्रकट करता है। सूफी संतों का मानना है कि ईश्वर की सेवा केवल धार्मिक कृत्यों के माध्यम से नहीं होती, बल्कि यह समाज और मानवता की सेवा के माध्यम से भी होती है। उन्होंने यह सिखाया कि हर व्यक्ति में ईश्वर का अंश होता है और इसीलिए किसी भी व्यक्ति की सेवा करना ईश्वर की सेवा के समान है। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती, जो भारत के प्रमुख सूफी संतों में से एक थे, ने अपने जीवन में मानवता की सेवा और प्रेम का संदेश दिया। उन्होंने कहा, "अगर तुम ईश्वर से प्रेम करते हो, तो उसकी रचना से भी प्रेम करो।" उनके इस संदेश ने समाज में सामाजिक न्याय, सहिष्णुता, और समानता की भावना को बढ़ावा दिया। उन्होंने अमीर-गरीब, हिंदू-मुस्लिम, जाति-धर्म के भेदभाव से परे जाकर सभी के प्रति समान प्रेम और करुणा का व्यवहार किया। उनका यह संदेश सूफी प्रेम और भक्ति के सिद्धांत की वास्तविकता को दर्शाता है।

सूफी संगीत और कव्वाली का योगदान

सूफी संतों ने प्रेम और भक्ति के संदेश को फैलाने के लिए संगीत और कव्वाली का उपयोग किया। सूफी संगीत और कव्वाली के माध्यम से वे अपने आध्यात्मिक अनुभवों को व्यक्त करते थे और लोगों को ईश्वर की ओर आकर्षित करते थे। संगीत के माध्यम से सूफी संतों ने प्रेम, भक्ति, और आध्यात्मिकता को प्रकट किया और समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक विभाजन को मिटाने का काम किया। अमीर खुसरो जैसे संगीतकारों और कवियों ने सूफी संगीत को एक नई दिशा दी, जो आज भी भारतीय उपमहाद्वीप में लोकप्रिय है। सूफी कव्वाली के दौरान गाए जाने वाले गीतों में ईश्वर की महिमा, प्रेम, और भाईचारे का संदेश होता है, जो समाज में धार्मिक और सांप्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देता है। सूफी संतों ने संगीत के माध्यम से लोगों को एकता, प्रेम, और करुणा की ओर प्रेरित किया।

मानवता की सेवा और सहिष्णुता का संदेश

मानवता की सेवा और सहिष्णुता का संदेश सूफी दर्शन का एक केंद्रीय पहलू है, जो सच्चे आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलने के लिए आवश्यक माना जाता है। सूफी संतों के अनुसार, ईश्वर की सेवा केवल धार्मिक कृत्यों और पूजा-पाठ तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह समाज में प्रेम, सहिष्णुता, और मानवता की सेवा के माध्यम से भी प्रकट होती है। सूफी संतों ने मानवता के प्रति अपने अपार प्रेम और करुणा को अपने जीवन और शिक्षाओं के माध्यम से दर्शाया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिकता का असली मापदंड समाज में समानता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना है।

सूफी संतों का मानवता के प्रति दृष्टिकोण

सूफी संतों का मानवता के प्रति दृष्टिकोण बहुत ही व्यापक और समावेशी होता है। उनके अनुसार, सभी मानव beings में ईश्वर का अंश होता है, और इसलिए हर व्यक्ति की सेवा करना ईश्वर की सेवा के समान है। सूफी संतों ने यह सिखाया कि हमें किसी भी व्यक्ति को उसके जाति, धर्म, या सामाजिक स्थिति के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए। उनके अनुसार, ईश्वर की वास्तविक सेवा तब होती है जब हम समाज के कमजोर और जरूरतमंद लोगों की मदद करते हैं और उनके साथ समानता का व्यवहार करते हैं। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती, जो भारतीय उपमहाद्वीप के प्रमुख सूफी संतों में से एक थे, ने अपने जीवन और शिक्षाओं के माध्यम से मानवता की सेवा का महत्वपूर्ण संदेश दिया। उन्होंने कहा कि अगर तुम ईश्वर से प्रेम करते हो, तो उसकी रचना से भी प्रेम करो। उनका यह संदेश न केवल समाज में सहिष्णुता और समानता की भावना को बढ़ावा देता है, बल्कि यह हमें यह भी सिखाता है कि ईश्वर की सेवा का मतलब केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे समाज में अच्छे कार्यों और मानवता की सेवा के माध्यम से भी प्रकट किया जा सकता है।

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 1, January 2025| DOI:10.15680/IJMRSET.2025.0801074

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

सहिष्णुता की अवधारणा

सहिष्णुता सूफी दर्शन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो सभी धर्मों, जातियों, और समुदायों के प्रति खुले मन और दिल से देखने की भावना को प्रकट करता है। सूफी संतों का मानना है कि ईश्वर सभी जीवों में समाहित है और इसलिए किसी भी व्यक्ति को उसकी धार्मिक या जातीय पहचान के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए। उन्होंने यह सिखाया कि हमें हर व्यक्ति को सम्मान देना चाहिए और उनके अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए, चाहे वे किसी भी पृष्ठभूमि से आते हों। सूफी संत शेख निजामुद्दीन औलिया ने सहिष्णुता और सामाजिक सौहार्द की भावना को अपने जीवन में प्रकट किया। उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम भेदभाव को खत्म करने और एकता के लिए काम किया। उनके जीवन और शिक्षाओं में यह स्पष्ट होता है कि वे सभी धर्मों और जातियों के प्रति सहिष्णुता और प्रेम का व्यवहार करते थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को यह सिखाया कि ईश्वर के संदेश को समझने और अपनाने के लिए हमें धार्मिक और सांप्रदायिक भेदभाव को त्यागना होगा।

मानवता की सेवा के उदाहरण

सूफी संतों के जीवन में मानवता की सेवा के कई उदाहरण मिलते हैं, जो उनके मानवीय मूल्यों और करुणा को दर्शाते हैं। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का जीवन एक ऐसा उदाहरण है, जो मानवता की सेवा और सहिष्णुता के सिद्धांत को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। उन्होंने अपने जीवन में हमेशा समाज के गरीब और जरूरतमंद लोगों की मदद की और उन्हें अपने आश्रय में स्थान दिया। उनकी दरगाह पर आने वाले सभी व्यक्तियों को बिना किसी भेदभाव के स्वागत किया जाता था, और उन्होंने कभी भी अमीर-गरीब का भेद नहीं किया। सूफी संतों का मानना था कि मानवता की सेवा केवल बाहरी कृत्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक आंतरिक भावना और दृष्टिकोण भी है। उन्होंने सिखाया कि हमें अपने दिल में करुणा और सहिष्णुता की भावना को बनाए रखना चाहिए, ताकि हम समाज में समानता और भाईचारे को बढ़ावा दे सकें। सूफी संतों का यह दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि सच्ची आध्यात्मिकता का मतलब केवल ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति नहीं है, बल्कि यह समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी और प्रेम को भी शामिल करता है।

सूफी संतों के शिक्षाओं का प्रभाव

सूफी संतों की शिक्षाएं और उनके जीवन के उदाहरण समाज में सहिष्णुता और मानवता के संदेश को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके द्वारा दिए गए शिक्षाओं ने समाज में धार्मिक और सांप्रदायिक भेदभाव को कम करने और लोगों के बीच एकता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने का काम किया है। सूफी संतों ने अपने जीवन में यह दिखाया कि सभी धर्मों और जातियों के प्रति सम्मान और प्रेम का व्यवहार करने से समाज में शांति और सामंजस्य स्थापित हो सकता है। इस प्रकार, सूफी संतों की शिक्षाओं ने समाज में एक सशक्त और सहिष्णु समुदाय का निर्माण करने में मदद की है। उनकी शिक्षाएं हमें यह सिखाती हैं कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की सेवा और उनके अधिकारों की रक्षा करना हमारी आध्यात्मिक जिम्मेदारी है। उनके जीवन और शिक्षाओं के माध्यम से हमें यह समझने को मिलता है कि सच्ची आध्यात्मिकता का मतलब केवल ईश्वर की पूजा और भक्ति नहीं है, बल्कि यह समाज में मानवता की सेवा और सहिष्णुता के माध्यम से भी प्रकट होती है।

समकालीन संदर्भ में सहिष्णुता और मानवता

आज के समय में, जब समाज में धार्मिक और सांप्रदायिक भेदभाव बढ़ रहे हैं, सूफी संतों के संदेश अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। उनके शिक्षाएं हमें यह सिखाती हैं कि हमें समाज में हर व्यक्ति के प्रति सहिष्णुता और सम्मान का व्यवहार करना चाहिए और सभी के अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए। सूफी संतों का यह संदेश आज के समय में भी समाज में शांति और एकता को बढ़ावा देने में मददगार साबित हो सकता है। सारांश में, सूफी संतों का मानवता की सेवा और सहिष्णुता का संदेश हमें यह सिखाता है कि सच्ची आध्यात्मिकता का मतलब केवल व्यक्तिगत पूजा और भक्ति तक सीमित नहीं है। बल्कि, यह समाज में प्रेम, समानता, और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने के माध्यम से प्रकट होती है। सूफी संतों के जीवन और शिक्षाओं के माध्यम से हमें यह समझने को मिलता है कि मानवता की सेवा और सहिष्णुता के सिद्धांत हमें एक बेहतर और अधिक एकजुट समाज की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं।

## III. निष्कर्ष

संतों के जीवन और शिक्षाएँ हमें यह सिखाती हैं कि सच्ची धार्मिकता और आध्यात्मिकता केवल व्यक्तिगत भक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज में एकता, करुणा, और भाईचारे की भावना को भी बढ़ावा देती है। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती और शेख निजामुद्दीन औलिया ने अपने जीवन के माध्यम से यह प्रदर्शित किया कि कैसे प्रेम और करुणा के सिद्धांत समाज के विभिन्न वर्गों और समुदायों के बीच समझ और सहयोग की भावना को बढ़ावा दे सकते हैं। उनका आदर्श हमें यह सिखाता है कि धर्म और आध्यात्मिकता का वास्तविक अर्थ केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के समग्र कल्याण और एकता की दिशा में भी योगदान कर सकता है। इन सूफी संतों की शिक्षाएँ आज भी भारतीय समाज में प्रासंगिक हैं। उनकी शिक्षाएँ धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 1, January 2025| DOI:10.15680/IJMRSET.2025.0801074

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

समानता, और मानवता की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। आधुनिक युग में जब समाज धार्मिक और सांप्रदायिक संघर्षों, सामाजिक असमानताओं, और सांस्कृतिक भिन्नताओं का सामना कर रहा है, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती और शेख निजामुद्दीन औलिया की शिक्षाएँ हमें एक सकारात्मक दिशा में मार्गदर्शन करती हैं। उनके जीवन और शिक्षाएँ यह प्रदर्शित करती हैं कि कैसे हम समाज में प्रेम, करुणा, और भाईचारे की भावना को अपनाकर एक बेहतर और समरस समाज की दिशा में योगदान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती और शेख निजामुद्दीन औलिया का प्रभाव भारतीय संगीत, साहित्य, और कला पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। सूफी संगीत और कव्वाली, जो इन संतों के शिक्षाओं और भक्ति पर आधारित हैं, ने भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। इनके गीत और संगीत न केवल धार्मिक भक्ति की भावना को प्रकट करते हैं, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों के बीच एकता और समझ की भावना को भी प्रोत्साहित करते हैं।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. फरीदी, हारून। शेख निजामुद्दीन औलियाः प्रकाश की किरण। मुंबईः लोकप्रिय प्रकाशन, 2010.
2. जाफरी, शहनाज। चिश्ती परंपरा में सूफी रहस्यवाद। जयपुरः रावत प्रकाशन, 2008.
3. इशाक, मलिक। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्तीः प्रेम और शांति के रहस्यवादी। दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस, 2011.
4. राशिद, बशीर। शेख निजामुद्दीन औलिया की विरासत। नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस, 2014.
5. भट्टी, रेहाना। चिश्ती सूफी और भारतीय संस्कृति पर उनका प्रभाव। लाहौरः फिरोजसन पब्लिशर्स, 2007.
6. हसन, जैनब । भारतीय इतिहास में सूफीवाद की भूमिकाः ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का एक अध्ययन। दिल्लीः आकार बुक्स, 2009.
7. नय्यर, अंजुम। शेख निजामुद्दीन औलिया और उनकी शिक्षाएँ। नई दिल्लीः ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2010.
8. शेख, मुस्तफा। चिश्ती आदेश की आध्यात्मिक विरासत। हैदराबादः हर-आनंद प्रकाशन, 2015.
9. जावेद, सईद। दिल्ली के सूफी संतः ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती और शेख निजामुद्दीन औलिया। दिल्लीः विजडम हाउस, 2012.
10. खान, आयशा। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्तीः करुणा के संत। मुंबईः न्यू होराइजन पब्लिकेशंस, 2008.
11. नजर, रिज़वान। शेख निजामुद्दीन औलिया की रहस्यमय शिक्षाएँ। दिल्लीः मनोहर पब्लिशर्स, 2011.
12. सिद्दीकी, अहमद। चिश्ती सूफीवाद और भारतीय संस्कृति पर इसका प्रभाव। दिल्लीः सेज पब्लिकेशंस, 2014.
13. चौधरी, एस. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की शिक्षाएँ और उनका प्रभाव। कराचीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2009.
14. सुल्तान, अब्दुल। शेख निजामुद्दीन औलिया का जीवन और आध्यात्मिक शिक्षाएँ। दिल्लीः आकार बुक्स, 2010.
15. गनी, तारिक। भारतीय समाज पर चिश्ती सूफीवाद का प्रभाव। नई दिल्लीः लोटस बुक्स, 2013.
16. मोहसिन, आबिद। शेख निजामुद्दीन औलियाः ए बीकन ऑफ लाइट। मुम्बईः जैको पब्लिशिंग हाउस, 2012.
17. अहमद, बिलाल। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्तीः प्रेम के संत। दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2014.
18. जुबैर, अमीना। चिश्ती आदेशः इतिहास और प्रभाव। हैदराबादः ओरिएंट लॉन्गमैन, 2008.
19. नईम, असलमा सूफीवाद और सामाजिक सुधारः ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का एक अध्ययन। दिल्लीः कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, 2011.
20. रउफ, इकबाल। शेख निजामुद्दीन औलिया की शिक्षाएँः एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक । दिल्लीः रूपा प्रकाशन, 2012.

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

# INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com